विस्स-धम्मो

(विश्वधर्म)

आचार्य वसुनन्दी मुनि

ग्रंथ	:	विस्स-धम्मो (विश्वधर्म)
मंगल आशीर्वाद	:	परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज
ग्रंथकार	:	अभीक्षण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
संपादन	:	आर्यिका वर्धस्वनंदनी
प्राप्ति स्थान	:	• श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली, बोलखेड़ा (कामां) राजस्थान
संस्करण	:	द्वितीय 1000 (सन् 2021)
प्रकाशक	:	निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति (पंजी.)
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9818394651, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

संपादकीय

ज्ञानाद्धितं वेत्ति ततः प्रवृत्तिं, रत्नत्रये संचित कर्म मोक्षः।
ततस्ततः सौख्यमबाध मुच्चैस्तेनात्रयत्नं विदधाति दक्षः॥

मनुष्य ज्ञान से हित को जानता है, हित का ज्ञान होने से रत्नत्रय में प्रवृत्ति करता है, रत्नत्रय में प्रवृत्ति करने से संचित कर्मों से मोक्ष होता है और संचित कर्मों के मोक्ष से निर्बाध उत्तम सुख की प्राप्ति होती है, इसलिये चतुर मनुष्य ज्ञान में प्रयत्न करते हैं।

भव्य-नराः ज्ञानरथाधिरूढाः, व्रजन्ति शीघ्रं शिवपत्तनञ्च।
अज्ञानिनो मौढ्यरथाधिरूढाः, व्रजन्ति श्वभ्राभिधपत्तनं वै॥

ज्ञान रूपी रथ पर सवार हुए भव्य जीव शीघ्र मोक्षरूपी नगर को प्राप्त होते हैं और मूर्खतारूपी रथ पर सवार हुए अज्ञानी जीव निश्चय से नरकरूपी नगर को प्राप्त होते हैं।

चेतना के क्षितिज पर उदीयमान सम्यग्ज्ञान का आदित्य अज्ञान रूपी तम को तिरोहित कर वस्तु का सम्यक् अवबोध कराने में समर्थ होता है और सम्यग्ज्ञान का यह मिहिर श्रुताभ्यास स्वाध्याय से तेजस्विता को प्राप्त होता है। ''सम्यग्ज्ञान का वह सूर्य कषायों का अवशोषण, भोग रूपी कीटाणुओं का नाश, सम्यगावबोध का प्रकाश फैलाता है।'' स्वाध्याय में निरत व्यक्ति के लिये मोक्ष रूपी दुर्ग तक पहुँचने में बाधक संसार का यह दुर्गम व दुर्लंघ्य सा प्रतीत होने वाला गिरी राईवत् हो जाता है जिससे मोक्ष यात्रा सरल व सुगम हो जाती है।

अतः भव्य जीवों के हितार्थ आचार्य श्री ने मूलभाषा प्राकृत में ग्रंथों का लेखन किया, जिससे भाषा को जीवंतता भी प्राप्त हो और सद्साहित्य के आलोक से संपूर्ण विश्व प्रकाशित हो सके।

यह ग्रंथ 165 गाथाओं में निबद्ध है। धर्म, आकाश के समान अखंड व अनंत है। पृथ्वी के तो खंड-खंड किए जा सकते हैं किन्तु आकाश को आज तक कोई भी सीमा में नहीं बाँध सकता है। यह धर्म भी आकाश के समान सबको अवगाहन देता है। कोई अग्नि से भोजन पकाए और कोई घर को जला ले इसमें अग्नि का तो कोई दोष नहीं। इसी प्रकार धर्म को लेकर झगड़ने वालों की यह अल्पज्ञता ही है अन्यथा धर्म का कोई दोष नहीं। अहिंसा, क्षमा, दया, मैत्री आदि से युक्त धर्म 'मानव धर्म' कहा जा सकता है। अग्नि में ऊष्णत्व के समान मानव में धर्म अनुस्यूत रूप से होना ही सार्थक है। जिस प्रकार ऊष्णत्व या दाहक गुण के बिना अग्नि का सद्भाव संभव नहीं उसी प्रकार धर्म के बिना सम्यक् व श्रेष्ठ मानव का सद्भाव संभव नहीं है। सर्व जाति, वर्ण, पंथ, आम्नाय, संप्रदाओं से निरपेक्ष इस ग्रंथ में सर्व सामान्य उन धर्मों का उल्लेख किया गया है जो मानवीय हैं या विश्व के प्रायः सभी धर्मों में जिनका स्थान है। यथा–

मण्णंति कइवइ-जणा, खमावणयं खमणं च जीवाणं।
खमा वीराभूसणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स॥18॥

क्षमा वीरों का आभूषण है। सभी जीवों को क्षमा करना और क्षमा माँगने को भी कई जन धर्म का प्रशस्त लक्षण मानते हैं।

जिस प्रकार एक छत के नीचे बैठे मानव एकत्रित हो महोत्सव करते हैं उसी प्रकार ग्रंथकार ने 'विश्वधर्म' यह शीर्षक देकर संपूर्ण विश्व को एक साथ समेटकर उसकी अखण्डता, एकता के लिये इस ग्रंथ का लेखन किया है। क्योंकि मानवों के एक होते ही समूचा विश्व एक हो जाता है तब आतंकवाद, युद्धादि का स्थान ही नहीं बचता। यह ग्रंथ सबके द्वारा पठनीय है। इसमें लिखित गुण व धर्म का प्रादुर्भाव स्वयं में हो ऐसा प्रयत्न पर ही ग्रंथ पाठन की सार्थकता है।

यदि इस ग्रंथ के संपादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें, हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से ग्रंथाध्ययन करें। जन-जन के श्रद्धापुंज परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज का संयम, तप, ज्ञान, साधना का सौरभ सहस्रों वर्षों तक संपूर्ण विश्व को सुरभित करता रहे। गुरुवर श्री को आरोग्य लाभ हो एवं अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करें। परम पूज्य गुरुवर श्री के चरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!.....।।

''जैनम् जयतु शासनम्''

श्री शुभमिति माघ शुक्ल दशमी
श्री वीर निर्वाण संवत् 2547
सोमवार 22.2.2021
श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली-बौलखेड़ा,
कामां, भरतपुर (राज.)

आर्यिका वर्धस्वनंदनी

विस्स-धम्मो

(विश्वधर्म)

वस्तु का स्वभाव धर्म है। कार्य में कारण का उपचार कर स्वभाव तक पहुँचाने वाले गुण निमित्तादि भी धर्म हैं। यह ग्रंथ मानवीय गुणों का कथन करने वाला, धर्म की अखण्डता, एकता व समन्वयता का परिचायक है।

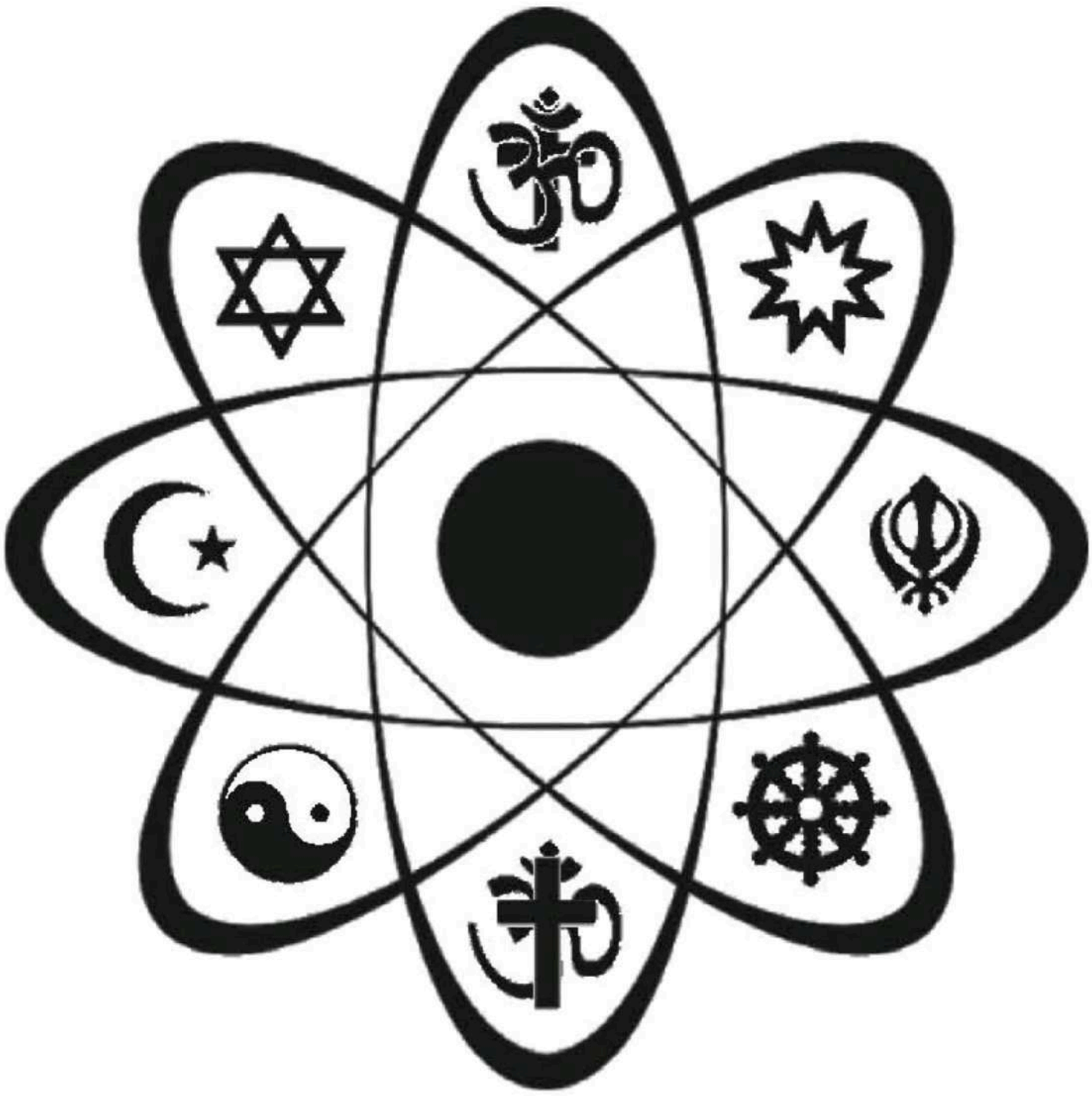

विस्स-धम्मो
(विश्वधर्म)

मंगलाचरण

वंदित्तु सव्व-सिद्धे, णिक्कम्मे सुद्ध-भाव-संजुत्ते।
सगप्पम्मि संलीणे, हेदू सिद्धीइ वि भव्वाण।।1।।
उसहादो वीरंतं, वंदे सव्व-तित्थयरा तियाले।
सव्व-केवली रिसिणो, साहु-मुणिवर-जोगी णिच्चं।।2।।

अन्वयार्थ-णिक्कम्मे-निष्कर्म **सुद्ध-भाव-संजुत्ते**-शुद्ध भाव से संयुक्त **सगप्पम्मि**-अपनी आत्मा में **संलीणे** संलीन **भव्वाण**-भव्यों की **वि**-भी **सिद्धीइ**-सिद्धि के **हेदू**-हेतु **सव्व-सिद्धे**-सभी सिद्धों की **वंदित्तु**-वंदना करके **णिच्चं**-नित्य **तियाले**-तीनों काल में **उसहादो**-श्री ऋषभदेव से **वीरंतं**-श्री महावीर पर्यंत **सव्व-तित्थयरा**- सभी तीर्थंकरों **सव्व-केवली**-सभी केवली **रिसिणो** ऋषि **साहु-मुणिवर-जोगी**-साधु, मुनिवर, योगियों को **वंदे**-वंदन करता हूँ।

पणगुरुणो जिणवयणं, धम्मं च चेइय-चेइयालयाणि।
संति-सायराइरियं, विज्जाणंद-सूरिं वंदे।।3।।

अन्वयार्थ-पणगुरुणो-पंच गुरू **जिणवयणं**-जिन वचन **धम्मं**-धर्म **चेइय-चेइयालयाणि**-चैत्य, चैत्यालय **संति-सायराइरियं**-आचार्य श्री शांति सागर जी **च**-और **विज्जाणंद-सूरिं**-आचार्य श्री विद्यानंद जी की **वंदे**-वंदना करता हूँ।

संसारे बहुजीवा, सया कंखंति अप्पसुहं संतिं।
जो धम्मो सुह-हेदू, णमंसामि विस्सधम्मं तं।।4।।

अन्वयार्थ-संसारे-संसार में **बहु-जीवा**-बहुत जीव **अप्पसुहं**-आत्मसुख **संतिं**-शांति की **कंखंति**-आकांक्षा करते हैं **जो**-जो **धम्मो**-

धर्म **सुह-हेदू**-सुख का हेतु है **तं**-उस **विस्स धम्मं**-विश्व धर्म को **सया**-सदा **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

परमेट्ठी परमप्पा, बंभो देवो ईसरो जिणिंदो।
सिवो संकरो विण्हू, सुगद-गुरू भगवदाइल्लो।।5।।
सव्वण्हु-सव्वदंसी, सुहइत्तओ विहादु-भद्दणंतो।
तित्थयर-सुद्ध-सिद्धो, णाहो सामी हरी बुद्धो।।6।।
भग्गेस-दयासिंधू, महादेवीसो पुण्णदो जणगो।
णिक्कम्म-देहतीदो, अणघादी अणेग-णामाणि।।7।।

अन्वयार्थ-परमेट्ठी-परमेष्ठी **परमप्पा**-परमात्मा **बंभो**-ब्रह्म **देवो**-देव **ईसरो**-ईश्वर **जिणिंदो**-जिनेंद्र **सिवो**-शिव **संकरो**-शंकर **विण्हू**-विष्णु **सुगद-गुरू**-सुगत, गुरु **भगवदाइल्लो**-भगवान्, आदिम **सव्वण्हू**-सर्वज्ञ **सव्वदंसी**-सर्वदर्शी **सुहइत्तओ**-सुखकर **विहादु-भद्दणंतो**-विधाता, भद्र, अनंत **तित्थयर-सुद्ध-सिद्धो**-तीर्थंकर, शुद्ध, सिद्ध **णाहो**-नाथ **सामी**-स्वामी **हरी**-हरि **बुद्धो**-बुद्ध **भग्गेस-दयासिंधू**-भाग्येश, दयासिंधु **महादेवीसो**-महादेव, ईश **पुण्णदो**- पुण्य दायक **जणगो**-जनक **णिक्कम्म-देहतीदो**-निष्कर्म, देहातीत **अणघादी**-अनघ आदि **अणेग-णामाणि**-अनेक नाम हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, अवरद्धिगं पडि भावं खमाए।
अप्पकल्लाण-हेदुं, पसत्थ-लक्खणं वि धम्मस्स।।8।।

अन्वयार्थ-कइवइ-जणा-कई जन **अवरद्धिगं पडि**-अपराधी के प्रति **अप्पकल्लाण-हेदुं**-आत्म कल्याण के हेतु **खमाए**-क्षमा के **भावं**-भाव को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थ-लक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, मद्दवधम्ममवलेव-विहीणं हु।
अप्पुत्थाण-कारणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।9।।

अन्वयार्थ-कइवइ-जणा कई जन **हु**-निश्चय से **अप्पुत्थाण-कारणं** आत्मोत्थान के कारण **अवलेव-विहीणं** अहंकार से विहीन **मद्दवधम्मं**-मार्दव धर्म को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**- प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, अज्जवभावं सया कवडरहिदं।
णियगिह-पवेसमग्गं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।10।।

अन्वयार्थ-कइवइ-जणा-कई जन **सया**-सदा **णियगिह-पवेस-मग्गं** निजगृह में प्रवेश के मार्ग **कवड-रहिदं** कपट से रहित **अज्जवभावं**-आर्जव भाव को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, सोअधम्मं लोह-भाव-विहीणं।
सुद्ध-चित्तस्स हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।11।।

अन्वयार्थ-कइवइ-जणा-कई जन **लोह-भाव-विहीणं**-लोभ भाव से विहीन **सुद्ध-चित्तस्स**-शुद्ध चित्त के **हेदुं**-हेतु **सोअधम्मं**-शौच धर्म को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, मोसविहीण-सच्चजुत्त-वयणाणि।
धम्माहारं णिच्चं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।12।।

अन्वयार्थ-कइवइ-जणा-कई जन **णिच्चं**-नित्य **धम्माहारं**-धर्माधार **मोसविहीण-सच्च-जुत्त-वयणाणि**-झूठ से विहीन सत्य से युक्त

वचनों को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, संजमभावं जुत्तं तिजोगेण।
असंजमो दुह-णिलयं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।13।।

अन्वयार्थ-असंजमो-असंयम **दुह-णिलयं**-दुःख का निलय है। **कइवइ-जणा**-कई जन **तिजोगेण**-तीन योग से **जुत्तं**-युक्त **संजमभावं**-संयमभाव को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खण**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, इच्छाणिरोह-तवं गुणागारं।
कम्मक्खयस्स हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।14।।

अन्वयार्थ-कइवइ-जणा-कई जन **कम्मक्खयस्स**-कर्म क्षय के **हेदुं**-हेतु **गुणागारं**-गुणागार **इच्छाणिरोह-तवं**-इच्छानिरोध तप को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, सव्वपरत्थादो चागभावं हु।
विहाव-चागो धम्मो, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।15।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **विहाव-चागो**-विभाव का त्याग **धम्मो**-धर्म है। **कइवइ-जणा**-कई जन **सव्वपरत्थादो**-सभी पर वस्तुओं से **चागभावं**-त्याग भाव को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, किंचिवि वत्थुं णत्थि मे लोयम्मि।
तं अकिंचण-भावं दु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।16।।

अन्वयार्थ-**दु**-निश्चित **लोयम्मि**-लोक में **किंचिवि**-किंचित् भी **वत्थुं**-वस्तु **मे**-मेरी **णत्थि**-नहीं है। **कइवइ-जणा**-कई जन **तं**- उस **अकिंचण भावं**-अकिंचन भाव को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, णियप्पम्मि थिरिमा हु बंभचेरं।
अप्परमण-हेदुं तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।17।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **णियप्पम्मि**-निजात्मा में **थिरिमा**-स्थिरता **बंभचेरं**-ब्रह्मचर्य है **कइवइ-जणा**-कई जन **तं**-उस **अप्परमण-हेदुं**-आत्म-रमण के हेतु को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, खमावणयं खमणं च-जीवाणं।
खमा वीराभूसणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।18।।

अन्वयार्थ-**खमा**-क्षमा **वीराभूसणं**-वीरों का आभूषण है। **जीवाणं**-सभी जीवों को **खमणं**-क्षमा करना **च**-और **खमावणयं**-क्षमा माँगने को **वि**-भी **कइवइ-जणा**-कई जन **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, सम्मं सद्धं धम्मस्स मूलं च।
सिवमग्गम्मि पहाणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।19।।

अन्वयार्थ-**कइवइ-जणा**-कई जन **सिवमग्गम्मि**-शिव मार्ग में **पहाणं**-प्रधान **च**-और **धम्मस्स**-धर्म के **मूलं**-मूल **सम्मं**-सम्यक् **सद्धं**-श्रद्धा को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, अप्पकल्लाण-हेदुं सण्णाणं।
सद्धा-वद-सुद्धीए, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।20।।

अन्वयार्थ-कइवइ-जणा-कई जन **सद्धा-वद-सुद्धीए**-श्रद्धा व व्रत शुद्धि के लिए **अप्पकल्लाण-हेदुं**-आत्म कल्याण के हेतु **सण्णाणं**-सम्यक् ज्ञान को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

मण्णंति कइवइ-जणा, सम्मं चारित्त-मप्पसुह-हेदुं।
चरियं सिव-मग्गो खलु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।21।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **सम्मं**-सम्यक् **चरियं**-चारित्र **सिव-मग्गो**-शिवमार्ग है **कइवइ-जणा**-कई जन **अप्पसुह-हेदुं**-आत्म सुख के हेतु सम्यक् **चारित्तं**-चारित्र को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **मण्णंति**-मानते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, दंसणविसुद्धि-भावणं सव्वदा।
परहिदकंखाजुत्तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।22।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **सव्वदा**-सर्वदा **परहिदकंखाजुत्तं**-परहित की आकांक्षा से युक्त **दंसणविसुद्धि-भावणं**-दर्शन विशुद्धि भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, सया विणयसंपण्णदा-भावणं।
मुत्तीए सहिं इमं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।23।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **सया**-सदा **मुत्तीए**-मुक्ति की **सहिं**-सखी **इमं**-इस **विणयसंपण्णदा-भावणं**-विनय संपन्नता

भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, अणदियार-भावणं सीलवदेसु।
तरणिव्व भवसायरे, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।24।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **भवसायरे**-भव सागर में **तरणिव्व**-नौका के समान **सीलवदेसु**-शील व्रतों में **अणदियार-भावणं**-अनतिचार भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, अभिक्खण-णाणुवजोग-भावणं हु।
अण्णाण-दाहगग्गिं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।25।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **हु**-निश्चय से **अण्णाण-दाहगग्गिं**-अज्ञान की दाहक अग्नि **अभिक्खण-णाणुवजोग-भावणं**-अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग की भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, संवेगभावं रोहगं भवस्स।
हरिसं धम्म-धम्मीसु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।26।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **भवस्स**-संसार के **रोहगं**-रोधक **धम्म-धम्मीसु**-धर्म-धर्मियों में **हरिसं**-हर्ष **संवेगभावं**-संवेग भाव को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, चागभावणं सव्व-दुक्ख-हारिं।
चागादु होज्ज संती, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।27।।

अन्वयार्थ-चागादु-त्याग से **संती**-शांति **होज्ज**-होती है। **कइवि**-कई **मणीसी**-मनीषी **सव्व-दुक्ख-हारिं**-सर्व दु:खहारी **चागभावणं**-त्याग भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, सगसत्तीइ करेज्ज तवं विमलं।
मोक्खदं तवभावणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।28।।

अन्वयार्थ-सगसत्तीइ-अपनी शक्ति के अनुसार **विमलं**-विमल **तवं**-तप **करेज्ज**-करना चाहिए। **कइवि**-कई **मणीसी**-मनीषी **मोक्खदं**-मोक्ष प्रदान करने वाली **तव-भावणं**-तप भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, सय साहु-समाहि-भावणं सुहदं।
आउसेज्ज धम्मिट्ठा, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।29।।

अन्वयार्थ-सय-सदा **धम्मिट्ठा**-धर्मिष्ठों की **आउसेज्ज**-सेवा करनी चाहिए। **कइवि**-कई **मणीसी**-मनीषी **सुहदं**-सुखद **साहु-समाहि-भावणं**-साधु समाधि भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, अरिहंत-भत्ति-भावणं णिम्मलं।
विसय-कसाय-णासगं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।30।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **विसय-कसाय-णासगं**-विषय-कषाय की नाशक **णिम्मलं**-निर्मल **अरिहंत-भत्ति-भावणं**-

अरिहंत भक्ति भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, आइरिय-भत्ति-भावणं सव्वदा।
णिम्मल-चरित्त-हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।31।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **सव्वदा**-सर्वदा **णिम्मल-चरित्त-हेदुं**-निर्मल चारित्र की हेतु **आइरिय-भत्ति-भावणं**-आचार्य भक्ति भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, णाणदं बहुसुद-भत्ति-भावणं च।
केवल-णाण-कारणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।32।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **णाणदं**-ज्ञान को देने वाली **च**-और **केवल-णाण-कारणं**-केवल ज्ञान की कारण **बहुसुद-भत्ति-भावणं**-बहुश्रुत भक्ति भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, होदि पवयणत्थो साहू सुदं च।
पवयण-भत्ति-भावणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।33।।

अन्वयार्थ-पवयणत्थो-प्रवचन का अर्थ **साहू**-साधु **च**-और **सुदं**-श्रुत **होदि**-होता है **कइवि**-कई **मणीसी**-मनीषी **पवयण-भत्ति-भावणं**-प्रवचन भक्ति भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, आवस्सग-किरिया-पालण-भावं।
सग-सुद्धीए हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।34।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **सग-सुद्धीए**-स्व-शुद्धि के **हेदुं**-हेतु **आवस्सग-किरिया-पालण-भावं**-आवश्यक क्रिया पालन के भाव को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, भावणं धम्मस्स पहावणाए।
सव्वविंयार-णासगं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।35।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **सव्वविंयार-णासगं**-सर्व विकार की नाशक **धम्मस्स**-धर्म की **पहावणाए**-प्रभावना की **भावणं**-भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, वच्छल्ल-भावणं साधम्मीसुं।
राय-दोस-विणासगं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।36।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **राय-दोस-विणासगं**-राग-द्वेष की विनाशक **साधम्मीसुं**-साधर्मियों में **वच्छल्ल-भावणं**-वात्सल्य भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, वेज्जावच्च-भावणं सुधम्मीण।
सगवरारोग्ग-हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।37।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **सगवरारोग्ग-हेदुं**-स्व-पर आरोग्य के हेतु **सुधम्मीण**-सुधर्मियों की **वेज्जावच्च-भावणं**-

वैय्यावृत्ति भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

कइवि मणीसी भणंति, सोलसकारण-भावणं सव्वदा।
तित्थयरपयडि-हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।38।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मणीसी**-मनीषी **सव्वदा**-सर्वदा **तित्थयरपयडि-हेदुं**-तीर्थंकर प्रकृति के हेतु **सोलस-कारण-भावणं**- सोलह कारण भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**- प्रशस्त लक्षण **भणंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, अहिंसाभावं हु सव्वाहारं।
सव्व-दुक्ख-विणासगं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।39।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **सव्व-दुक्ख-विणासगं**-सर्व दुःख नाशक **हु**-निश्चय से **सव्वाहारं**-सभी के आधार **अहिंसाभावं**-अहिंसा भाव को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, आगम-वयणं सगवर-मंगल्लं।
आगमप्प-पयासणो, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।40।।

अन्वयार्थ-आगमप्प-पयासणो-आगम आत्मा का प्रकाशक है। **कइवि**-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **सगवर-मंगल्लं**-स्व-पर मंगलकारी **आगम-वयणं**-आगम वचन को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, जहत्थरूव-पयासगं वत्थूण।
सव्व-मंगल्ल-सच्चं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।41।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **वत्थूण**-वस्तुओं के **जहत्थरूव-पयासगं**-यथार्थ रूप के प्रकाशक **सव्व-मंगल्ल-सच्चं**-सर्व मंगलकारी सत्य को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, अदत्तपरदव्वगहणस्स चागं।
संतोसद-मचोरियं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।42।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **संतोसदं**-संतोष दायक **अदत्तपरदव्वगहणस्स**-बिना दिए गए पर द्रव्य के ग्रहण के **चागं**-त्याग इस **अचोरियं**-अचौर्य को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, सया वदसिरोमणिं बंभचेरं।
सीलं सिव-सोवाणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।43।।

अन्वयार्थ-सीलं-शील **सया**-सदा **सिव-सोवाणं**-शिव का सोपान है **कइवि**-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **वदसिरोमणिं**-व्रत शिरोमणि **बंभचेरं**-ब्रह्मचर्य को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, चागमपरिग्गहं सव्व-संगस्स।
कम्म-संवर-कारणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।44।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **कम्म-संवर-कारणं**-कर्म के संवर का कारण **सव्व-संगस्स**-सर्व परिग्रह के **चागं**-त्याग

अपरिग्गहं-अपरिग्रह को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, अहिंसादि-पणमहव्वदं सिवदं।
पणविह-पाव-णासगं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।45।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **पणविह-पाव-णासगं**-पाँच प्रकार के पापों के नाशक **सिवदं** शिवदायक **अहिंसादि-पणमहव्वदं**-अहिंसा आदि पाँच महाव्रत को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, भव-अणिच्चत्त-भासगं अणिच्चं।
वेरग्गस्स कारणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।46।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **वेरग्गस्स**-वैराग्य की **कारणं**-कारण **भव-अणिच्चत्त-भासगं**-संसार की अनित्यता की भासक **अणिच्चं**-अनित्य भावना को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, भव-दुह-कहगं संसारणुवेक्खं।
भवविरत्तीइ हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।47।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **भव-विरत्तीइ**-संसार से विरक्ति की **हेदुं**-हेतु **भव-दुह-कहगं**-संसार के दु:खों को कहने वाली **संसारणुवेक्खं**-संसारानुप्रेक्षा को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, एगत्ताणुवेक्खं कल्लाणाय।
एगो हं सुद्धो सय, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।48।।

अन्वयार्थ-**हं**-मैं **सय**-सदा **एगो**-एक हूँ **सुद्धो**-शुद्ध हूँ **कइवि**-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **कल्लाणाय**-कल्याण के लिए **एगत्ताणुवेक्खं**-एकत्वानुप्रेक्षा को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, पुढोजगाणि दव्वाणि अप्पादो।
अण्णत्तस्स चिंतणं हु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।49।।

अन्वयार्थ-**अप्पादो**-आत्मा से सभी **दव्वाणि**-द्रव्य **पुढोजगाणि**-पृथग्भूत हैं। **कइवि**-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **अण्णत्तस्स**-अन्यत्व के **चिंतणं**-चिंतन को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, किमिमलादि-भरिदो असुई देहो।
असुइ-भाव-चिंतणं हु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।50।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **देहो**-देह **किमिमलादि-भरिदो**-कृमि, मल आदि से भरी हुई **असुई**-अपवित्र है। **कइवि**-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **असुइ-भाव-चिंतणं**-अशुचि भाव चिंतन को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, भव-हेदु-आसवो ण मे सहावो।
आसव-हेदु-चिंतणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।51।।

अन्वयार्थ-**भव-हेदु-आसवो**-भव का हेतु आस्रव **मे**-मेरा **सहावो**-स्वभाव **ण**-नहीं है। **कइवि**-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **आसव-हेदु**-

चिंतणं-आस्रव के हेतु के चिंतन को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, कम्मासव-रोह-चिंतणं णिच्चं।
चरियं संवर-हेदू, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।52।।

अन्वयार्थ-चरियं-चारित्र **संवर-हेदू**-संवर का हेतु है। **कइवि**-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **णिच्चं** नित्य **कम्मासव-रोह-चिंतणं**-कर्मास्रव के निरोध के चिंतन को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, णिज्जरा-हेदु-चिंतणं सव्वदा।
णिज्जरा कम्म-सडणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।53।।

अन्वयार्थ-कम्म-सडणं-कर्म का झरना **णिज्जरा**-निर्जरा है। **कइवि**-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **सव्वदा** सर्वदा **णिज्जरा-हेदु-चिंतणं**-निर्जरा के हेतु के चिंतन को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, कम्म-णिमित्तेण परिभमदि लोगे।
जीवो लोय-चितंणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।54।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **कम्म-णिमित्तेण** कर्म के निमित्त से **लोगे** लोक में **परिभमदि**-परिभ्रमण करता है। **कइवि**-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **लोय-चिंतणं**-लोक के चिंतन को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, चिंतणं बोहि-दुल्लह-भावणाइ।
रयणत्तयं हि बोही, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।55।।

अन्वयार्थ-रयणत्तयं-रत्नत्रय **हि**-ही **बोही**-बोधि है। **कइवि**-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **बोहि-दुल्लह-भावणाइ**-बोधि दुर्लभ भावना के **चिंतणं**-चिंतन को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

दिसंति कइवि मुणिवरा, सावय-समण-कत्तव्व-भासगस्स।
धम्मणुवेक्ख-चिंतणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।56।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई **मुणिवरा**-मुनिवर **सावय-समण-कत्तव्व-भासगस्स**-श्रावक व श्रमण के कर्त्तव्य को कहने वाली **धम्मणुवेक्ख-चिंतणं**-धर्मानुप्रेक्षा के चिंतन को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **दिसंति**-कहते हैं।

कइवय-रिसीहि भणिदं, सव्वणत्थ-हेदु-अप्प-घादगस्स।
आसव-उज्झणं सया, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।57।।

अन्वयार्थ-सया-सदा **सव्वणत्थ-हेदु-अप्प-घादगस्स**-सर्व अनर्थ के हेतु, आत्मा के घातक **आसव-उज्झणं**-आस्रव का त्याग करना **वि**-भी **कइवय-रिसीहि**-कई ऋषियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणिदं**-कहा गया है।

कइवय-रिसीहि भणिदं, अणेग-जीव-घादग-महु-उज्झणं।
तिव्व-पाव-कारगस्स, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।58।।

अन्वयार्थ-तिव्व-पाव-कारगस्स-तीव्र पाप के कारक **अणेग-जीव-घादग-महु-उज्झणं**-अनेक जीवों के घातक शहद का त्याग

करना **वि**-भी **कइवय-रिसीहि**-कतिपय ऋषियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणिदं**-कहा गया है।

कइवय-रिसीहि भणिदं, सुहबुद्धि-विणासग-मंस-उज्झणं।
णिरय-गदीइ हेदुस्स, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।59।।

अन्वयार्थ-णिरय-गदीइ-नरक गति के **हेदुस्स**-हेतु **सुहबुद्धि-विणासग-मंस-उज्झणं**-शुभ बुद्धि विनाशक माँस का त्याग करना **वि**-भी **कइवय-रिसीहि**-कतिपय ऋषियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणिदं**-कहा गया है।

कइवय-रिसीहि भणिदं, सव्वाहार-उज्झणं रत्तीए।
जीवघाद-हेदुस्स हु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।60।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **जीवघाद-हेदुस्स**-जीव घात के हेतु **रत्तीए**-रात्रि में **सव्वाहार-उज्झणं**-सभी आहार का त्याग करना **वि**-भी **कइवय-रिसीहि**-कतिपय ऋषियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणिदं**-कहा गया है।

कइवय-रिसीहि भणिदं, अण्णाद-फलाण उज्झणं णिच्चं।
अदिसय-पाव-हेदुस्स, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।61।।

अन्वयार्थ-अदिसय-पाव-हेदुस्स-अतिशय पाप के हेतु **अण्णाद-फलाण**-अज्ञात फलों का **णिच्चं**-नित्य **उज्झणं**-त्याग करना **वि**-भी **कइवय-रिसीहि**-कतिपय ऋषियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणिदं**-कहा गया है।

कइवय-रिसीहि भणिदं, उज्झणं वडादि-पणुंबरफलाण।
जीवदया-करुणाए, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।62।।

अन्वयार्थ-जीवदया-करुणाए-जीवदया, करुणा के लिए **वडादि-पणुंबरफलाण**-बड़ आदि पाँच उदम्बर फलों का **उज्झणं**-त्याग करना **वि**-भी **कइवय-रिसीहि**-कतिपय ऋषियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणिदं**-कहा गया है।

कइवय-रिसीहि भणिदं, सया उज्झणं अभक्ख-भक्खणस्स।
बहुजीवरक्खणत्थं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।63।।

अन्वयार्थ-बहुजीवरक्खणत्थं-बहुत जीवों के रक्षण के लिए **सया**-सदा **अभक्ख-भक्खणस्स**-अभक्ष्य भक्षण का **उज्झणं**-त्याग करना **वि**-भी **कइवय-रिसीहि**-कतिपय ऋषियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणिदं**-कहा गया है।

कइवय-रिसीहि भणिदं, वियडिरूव-कोह-कसाय-उज्झणं।
सवर-ताव-कारणस्स, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।64।।

अन्वयार्थ-सवर-ताव-कारणस्स-स्व-पर ताप की कारण **वियडिरूव-कोह-कसाय-उज्झणं**-विकृति रूप क्रोध कषाय का त्याग करना **वि**-भी **कइवय-रिसीहि**-कतिपय ऋषियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणिदं**-कहा गया है।

कइवय-रिसीहि भणिदं, कारणं दोत्थस्स दुट्ठ-भावाण।
माणस्स अवहेडणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।65।।

अन्वयार्थ-दोत्थस्स-दुर्गति और **दुट्ठ-भावाण**-दुष्ट भावों के **कारणं**-कारण **माणस्स**-मान का **अवहेडणं**-त्याग करना **वि**-भी **कइवय-**

रिसीहि-कतिपय ऋषियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणिदं**-कहा गया है।

कइवय-रिसीहि भणिदं, छल-कवड-मायाए उस्सिक्कणं।
तिरियगदि-हेदुस्स सय, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।66।।

अन्वयार्थ-सय-सदा **तिरिय-गदि-हेदुस्स**-तिर्यंच गति के हेतु **छल-कवड-मायाए**-छल, कपट, माया का **उस्सिक्कणं**-त्याग करना **वि**-भी **कइवय-रिसीहि**-कतिपय ऋषियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **भणिदं**-कहा गया है।

कइवय-दमीहि कहिदं, लोह-उज्झणं सव्व-अह-जणगस्स।
सुह-कम्म-बंधणत्थं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।67।।

अन्वयार्थ-सुह-कम्म-बंधणत्थं-शुभ कर्म बंधन के लिए **सव्व-अह-जणगस्स**-सर्व पापों के जनक **लोह-उज्झणं**-लोभ का त्याग करना **वि**-भी **कइवय-दमीहि**-कतिपय दमियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **कहिदं**-कहा गया है।

कइवय-दमीहि कहिदं, कलह-वड्ढग-जूअकेलि-उज्झणं।
अणत्थ-णिवारणत्थं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।68।।

अन्वयार्थ-अणत्थ-णिवारणत्थं-अनर्थ निवारण के लिए **कलह-वड्ढग-जूअकेलि-उज्झणं**-कलहवर्द्धक द्यूत-क्रीड़ा का त्याग करना **वि**-भी **कइवय-दमीहि** कतिपय दमियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **कहिदं**-कहा गया है।

कइवय-दमीहि कहिदं, कुलणासग-वेस्सागमण-उज्झणं।
पालिदुं-सयायारं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।69।।

अन्वयार्थ-सयायारं-सदाचार के **पालिदुं**-पालन के लिए **कुलणासग-वेस्सागमण-उज्झणं**-कुल नाशक, वेश्यागमन का त्याग करना **वि**-भी **कइवय-दमीहि** कतिपय दमियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **कहिदं**-कहा गया है।

कइवय-दमीहि कहिदं, अइ-पाव-हेदु-आहेड-उज्झणं।
सव्व-पाण-रक्खेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।70।।

अन्वयार्थ-सव्व-पाण-रक्खेदु-सभी की प्राण रक्षा के लिए **अइ-पाव-हेदु-आहेड-उज्झणं**-अति पाप के हेतु शिकार का त्याग करना **वि**-भी **कइवय-दमीहि**-कतिपय दमियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **कहिदं**-कहा गया है।

कइवय-दमीहि कहिदं, आमुयणं सया परित्थि-गमणस्स।
णिरय-गदीइ मग्गस्स, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।71।।

अन्वयार्थ-णिरय-गदीइ-नरक गति के **मग्गस्स**-मार्ग **परित्थि-गमणस्स**-पर स्त्री गमन का **सया**-सदा **आमुयणं**-त्याग करना **वि**-भी **कइवय-दमीहि**-कतिपय दमियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **कहिदं**-कहा गया है।

कइवय-दमीहि कहिदं, सय दमणं सव्वदुप्पविट्ठीए।
दुब्भाव-विणासत्थं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।72।।

अन्वयार्थ-सय-सदा **दुब्भाव-विणासत्थं**-दुर्भाव के विनाश के लिए **सव्वदुप्पविट्ठीए**-सर्व दुष्प्रवृत्ति के **दमणं**-दमन को **वि**-भी **कइवय-**

दमीहि-कतिपय दमियों के द्वारा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **कहिदं**-कहा गया है।

गणहरा आइक्खंति, जिणदेवागम-णिग्गंथ-गुरूणं।
णिस्संक-सद्दहणं च, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।73।।

अन्वयार्थ-जिणदेवागम-णिग्गंथ-गुरूणं च-जिनदेव, आगम और निर्ग्रन्थ गुरुओं का **णिस्संक-सद्दहणं**-नि:शंक श्रद्धान करने को **वि**-भी **गणहरा**-गणधर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **आइक्खंति**-कहते हैं।

गणहरा आइक्खंति, णिक्कंखिय-भावेण किदं पूयं।
कंखा दुहाण जणणी, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।74।।

अन्वयार्थ-कंखा-आकांक्षा **दुहाण**-दु:खों की **जणणी**-जननी है। **गणहरा**-गणधर **णिक्कंखिय-भावेण**-निष्कांक्षित भाव से **किदं**-कृत **पूयं**-पूजा को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **आइक्खंति**-कहते हैं।

गणहरा आइक्खंति, धम्मिट्ठा पडि जुगुच्छाइ-चागं।
सेवा-वड्ढणत्थं हु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।75।।

अन्वयार्थ-गणहरा-गणधर देव **हु**-निश्चय से **सेवा-वड्ढणत्थं**-सेवा वर्द्धन के लिए **धम्मिट्ठा पडि**-धर्मिष्ठों के प्रति **जुगुच्छाइ-चागं**-जुगुप्सा आदि त्याग को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **आइक्खंति**-कहते हैं।

गणहरा आइक्खंति, सया मूढदाए रहिदं दिट्ठिं।
अण्णाणं दुह-बीयं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।76।।

अन्वयार्थ-अण्णाणं-अज्ञान **सया**-सदा **दुह-बीयं**-दु:ख का बीज है। **गणहरा**-गणधर देव **मूढदाए**-मूढ़ता से **रहिदं**-रहित **दिट्ठिं**-दृष्टि को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **आइक्खंति**-कहते हैं।

गणहरा आइक्खंति, सव्वहिदंकरं सया धिदिधम्मं।
संसारे सुह-हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।77।।

अन्वयार्थ-गणहरा-गणधर **संसारे**-संसार में **सया**-सदा **सुह-हेदुं**-सुख के हेतु **सव्वहिदंकरं**-सर्व हितंकर **धिदिधम्मं**-धृति धर्म को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **आइक्खंति**-कहते हैं।

गणहरा आइक्खंति, संलीणं बुद्धिं सुहकज्जेसुं।
सुहबुद्धी सुहंकरा, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।78।।

अन्वयार्थ-सुहबुद्धी-शुभ बुद्धि **सुहंकरा**-सुखकारक है। **गणहरा**-गणधर **सुहकज्जेसुं**-शुभ कार्यों में **संलीणं**-संलीन **बुद्धिं**-बुद्धि को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **आइक्खंति**-कहते हैं।

गणहरा आइक्खंति, णिम्मलो विज्जारहे आरूढो।
विमुत्तीए सुविज्जं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।79।।

अन्वयार्थ-विज्जारहे-विद्या रथ पर **आरूढो**-आरूढ़ **णिम्मलो**-निर्मल चित्त वाला है। **गणहरा**-गणधर **विमुत्तीए**-विमुक्ति के लिए

सुविज्जं-सुविद्या को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **आइक्खंति**-कहते हैं।

गणहरा आइक्खंति, णो कुप्पदि कोह-णिमित्त-लद्धे वि।
तं अकोह-सुह-भावं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।80।।

अन्वयार्थ-जो **कोह-णिमित्त-लद्धे**-क्रोध के निमित्त प्राप्त होने पर **वि**-भी **णो कुप्पदि**-क्रोध नहीं करता उसके **तं**-उस **अकोह-सुह-भावं**-अक्रोध रूप शुभ भाव को **वि**-भी **गणहरा**-गणधर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **आइक्खंति**-कहते हैं।

सीसंति वादरसणा, सव्वजीवेसुं भावं दयाए।
सुद्धप्पस्स सरूवं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।81।।

अन्वयार्थ-**सव्वजीवेसुं**-सभी जीवों में **सुद्धप्पस्स**-शुद्धात्मा के स्वरूप **दयाए**-दया के **भावं**-भाव को **वि**-भी **वादरसणा**-वातरसना **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सीसंति**-कहते हैं।

सीसंति वादरसणा, धारेज्ज संतिं विसय-विरत्तीइ।
संतिं हु जीव-पयडिं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।82।।

अन्वयार्थ-**विसय-विरत्तीइ**-विषयों से विरक्ति के लिए **संतिं**-शान्ति **धारेज्ज**-धारण करनी चाहिए। **हु**-निश्चय से **जीव-पयडिं**-जीव की प्रकृति **संतिं**-शांति को **वि**-भी **वादरसणा**-वातरसना **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सीसंति**-कहते हैं।

सीसंति वादरसणा, पूयण-मच्चणं हवण-मिज्जं तह।
सस्सद-सुहस्स हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।83।।

अन्वयार्थ-**सस्सद-सुहस्स**-शाश्वत सुख की **हेदुं**-हेतु **पूयणं**-पूजन

अच्चणं-अर्चन **हवणं**-हवन **तह**-तथा **इज्जं**-इज्या को **वि**-भी **वादरसणा**-वातरसना **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सीसंति**-कहते हैं।

सीसंति वादरसणा, सक्कारजुद-सुसत्थाणज्झयणं।
चित्तस्स णिरोहत्थं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।84।।

अन्वयार्थ-चित्तस्स-चित्त के **णिरोहत्थं**-निरोध के लिए **सक्कारजुद-सुसत्थाणं**-संस्कार युक्त सुशास्त्रों के **अज्झयणं**-अध्ययन को **वि**-भी **वादरसणा**-वातरसना **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सीसंति**-कहते हैं।

सीसंति वादरसणा, भवत्था लोह-हेदू अह-जणगो।
तं लोह-रहिद-भावं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।85।।

अन्वयार्थ-भवत्था-संसार के पदार्थ **अह-जणगो**-पाप के जनक **लोह-हेदू**-लोभ के हेतु हैं। **तं**-उस **लोह-रहिद-भावं**-लोभ से रहित भाव को **वि**-भी **वादरसणा**-वातरसना **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सीसंति**-कहते हैं।

सीसंति वादरसणा, अपडियार-पुव्वगं हु सहिण्हुस्स।
गुणाकस्सग-तितिक्खं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।86।।

अन्वयार्थ-वादरसणा-वातरसना **हु**-निश्चय से **सहिण्हुस्स**-सहिष्णु के **अपडियार-पुव्वगं**-अप्रतिकार पूर्वक **गुणाकस्सग-तितिक्खं**-गुणाकर्षक तितिक्षा को **वि**-भी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सीसंति**-कहते हैं।

सीसंति वादरसणा, सवर-मंगलकारग-सयायारं।
मज्जादा-रक्खगं हु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।87।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **मज्जादा-रक्खगं**-मर्यादा का रक्षक **सवर-मंगलकारगं**- स्व-पर मंगलकारक **सयायारं**-सदाचार को **वि**-भी **वादरसणा**-वातरसना **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सीसंति**-कहते हैं।

सीसंति वादरसणा, चरणफासं गुरु-पिदर-बुड्ढाणं।
विणयभाव-संजुत्तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।88।।

अन्वयार्थ-**विणयभाव-संजुत्तं**-विनयभाव से संयुक्त **गुरु-पिदर-बुड्ढाणं**-गुरु, माता-पिता व वृद्धों के **चरणफासं**-चरण स्पर्श को **वि**-भी **वादरसणा**-वातरसना **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सीसंति**-कहते हैं।

सीसंति वादरसणा, सया पिवेज्ज गालण-जलं धम्मी।
तं सुधम्मस्स किरियं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।89।।

अन्वयार्थ-**धम्मी**-धर्मी को **सया**-सदा **गालण-जलं**-छना हुआ जल **पिवेज्ज**-पीना चाहिए **तं**-उस **सुधम्मस्स**-सद्धर्म की **किरियं**- क्रिया को **वि**-भी **वादरसणा**-वातरसना **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सीसंति**-कहते हैं।

सीसंति वादरसणा, सव्वजीवा पडि वच्छल्ल-भावं।
सुह-पीदीए हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।90।।

अन्वयार्थ-**सुह-पीदीए**-शुभ प्रीति का **हेदुं**-हेतु **सव्व-जीवा**-सब जीवों के **पडि**-प्रति **वच्छल्ल-भावं**-वात्सल्य भाव को **वि**-भी

वादरसणा-वातरसना **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सीसंति**-कहते हैं।

कइवि महप्पा वदंति, णिम्मल-चित्तं धम्मस्साहारं।
दोस-विणासगं सया, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।91।।

अन्वयार्थ-**धम्मस्साहारं**-धर्म का आधार **दोस-विणासगं**-दोष का विनाशक **णिम्मल-चित्तं**-निर्मल चित्त को **वि**-भी **कइवि**-कई **महप्पा**-महात्मा **सया**-सदा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वदंति**-कहते हैं।

कइवि महप्पा वदंति, गमणं दिवसे पस्संतो मग्गं।
सुह-इरियासमिदी तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।92।।

अन्वयार्थ-**दिवसे**-दिन में **मग्गं**-मार्ग को **पस्संतो**-देखकर **गमणं**-गमन करना **सुह-इरियासमिदी**-शुभ ईर्यासमिति है **तं**-उस ईर्यासमिति को **वि**-भी **कइवि**-कई **महप्पा**-महात्मा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वदंति**-कहते हैं।

कइवि महप्पा वदंति, भासेज्ज वयणं पूदं सत्थेण।
सुह-भासा-समिदिं तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।93।।

अन्वयार्थ-**सत्थेण**-शास्त्र के द्वारा **पूदं**-छानकर **वयणं**-वचनों को **भासेज्ज**-बोलना चाहिए **तं**-उस **सुह-भासा-समिदिं**-शुभ भाषा समिति को **वि**-भी **कइवि**-कई **महप्पा**-महात्मा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वदंति**-कहते हैं।

कइवि महप्पा वदंति, सोहित्ता सुद्धभोयणं दिवसे।
एसणासमिदी हु तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।94।।

अन्वयार्थ-**दिवसे**-दिन में **सोहित्ता**-शोधकर **सुद्धभोयणं**-शुद्ध भोजन करना **एसणासमिदी**-एषणा समिति है **तं**-उस एषणा समिति को **वि**-भी **कइवि**-कई **महप्पा**-महात्मा **हु**-निश्चय से **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वदंति**-कहते हैं।

कइवि महप्पा वदंति, उच्चारणं खलु उस्सग्ग-समिदी।
भूमिं पमज्जित्तु तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।95।।

अन्वयार्थ-**भूमिं**-भूमि का **पमज्जित्तु**-प्रमार्जन कर **उच्चारणं**-मलोत्सर्ग करना **खलु**-निश्चय से **उस्सग्ग-समिदी**-उत्सर्ग समिति है **तं**-उस उत्सर्ग समिति को **वि**-भी **कइवि**-कई **महप्पा**-महात्मा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वदंति**-कहते हैं।

कइवि महप्पा वदंति, पमज्जिय णिक्खेवणं आदाणं।
सा समिदी तं सुहदं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।96।।

अन्वयार्थ-**पमज्जिय**-प्रमार्जन करके वस्तु को **आदाणं**-उठाना (व) **णिक्खेवणं**-रखना **सा**-वह आदान निक्षेपण **समिदी**-समिति है **तं**-उस **सुहदं**-सुखद (आदान निक्षेपण समिति) को **वि**-भी **कइवि**-कई **महप्पा**-महात्मा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वदंति**-कहते हैं।

कइवि महप्पा वदंति, इंदिय-संजम-सुहंकरो णिच्चं।
फासिंदियस्स रोहं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।97।।

अन्वयार्थ-**इंदिय-संजमो**-इंद्रिय संयम **णिच्चं**-नित्य **सुहंकरो**-सुख देने वाला है **फासिंदियस्स**-स्पर्शन इन्द्रिय के **रोहं**-निरोध को **वि**-भी **कइवि**-कई **महप्पा**-महात्मा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वदंति**-कहते हैं।

कइवि महप्पा वदंति, संजम-परिपालणत्थं णियमेण।
रसणिंदियस्स रोहं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।98।।

अन्वयार्थ-संजम-परिपालणत्थं-संयम के परिपालन के लिए **णियमेण**-नियम से **रसणिंदियस्स**-रसना इंद्रिय के **रोहं**-निरोध करने को **वि**-भी **कइवि**-कई **महप्पा**-महात्मा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वदंति**-कहते हैं।

कइवि महप्पा वदंति, सुह-हेदू णिगिण्हणं इंदियाण।
घाणिंदियस्स रोहं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।99।।

अन्वयार्थ-इंदियाण-इंद्रियों का **णिगिण्हणं**-निरोध करना **सुह-हेदू**-सुख का हेतु है **घाणिंदियस्स**-घ्राण इन्द्रिय के **रोहं**-निरोध को **वि**-भी **कइवि**-कई **महप्पा**-महात्मा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वदंति**-कहते हैं।

कइवि महप्पा वदंति, विरत्ति-कारणं भव-तणु-भोयादु।
चक्खु-इंदिय-णिरोहं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।100।।

अन्वयार्थ-भव-तणु-भोयादु-संसार, शरीर, भोगों से **विरत्ति-कारणं**-विरक्ति का कारण **चक्खु-इंदिय-णिरोहं**-चक्षु इंद्रिय के निरोध को **वि**-भी **कइवि**-कई **महप्पा**-महात्मा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वदंति**-कहते हैं।

कइवि महप्पा वदंति, अप्पगुणा रक्खिदुं च संवराय।
सोदिंदियस्स रोहं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।101।।

अन्वयार्थ-अप्पगुणा-आत्मगुणों की **रक्खिदुं**-रक्षा **च**-और **संवराय**-संवर के लिए **सोदिंदियस्स**-श्रोतेन्द्रिय अर्थात् कर्ण इंद्रिय **रोहं**-रोध

को **वि**-भी **कइवि**-कई **महप्पा**-महात्मा **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वदंति**-कहते हैं।

दियंबरा वज्जरंति, परमप्पाण आराहणं णिच्चं।
कम्मक्खय-णिमित्तं हु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।102।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **कम्मक्खय-णिमित्तं**-कर्मक्षय के निमित्त **णिच्चं**-नित्य **परमप्पाण**-परमात्मा की **आराहणं**-आराधना को **वि**-भी **दियंबरा**-दिगम्बर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वज्जरंति**-कहते हैं।

दियंबरा वज्जरंति, वुड्ढणुवज्जणं पडिअरणं सया।
पुज्जाण अहिवादणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।103।।

अन्वयार्थ-**सया**-सदा **वुड्ढणुवज्जणं**-वृद्धों की सेवा करना **पडिअरणं**-रोगियों की सेवा करना व **पुज्जाण**-पूज्य जनों के **अहिवादणं**-अभिवादन को **वि**-भी **दियंबरा**-दिगम्बर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वज्जरंति**-कहते हैं।

दियंबरा वज्जरंति, समभावं सव्वत्थेसुं भवस्स।
रायद्देस-विहीणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।104।।

अन्वयार्थ-**भवस्स**-संसार के **सव्वत्थेसुं**-सभी पदार्थों में **रायद्देस-विहीणं**-राग-द्वेष से विहीन **समभावं**-समभाव को **वि**-भी **दियंबरा**-दिगम्बर मुनि **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वज्जरंति**-कहते हैं।

दियंबरा वज्जरंति, चउवीस-तित्थयर-भत्ती थुदी हु।
पुण्ण-वड्ढग-थुदिं तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।105।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **चउवीस-तित्थयर-भत्ती**-चौबीस तीर्थंकरों की भक्ति **थुदी**-स्तुति है। **तं**-उस **पुण्ण-वड्ढग-थुदिं**-पुण्य-वर्द्धक स्तुति को **वि**-भी **दियंबरा**-दिगम्बर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वज्जरंति**-कहते हैं।

दियंबरा वज्जरंति, सगदोसालोयणं पडिक्कमणं।
सव्व-दोस-खयिदुं तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।106।।

अन्वयार्थ-सगदोसालोयणं-अपने दोषों की आलोचना **पडिक्कमणं**-प्रतिक्रमण है। **सव्व-दोस-खयिदुं**-सभी दोषों के क्षय के लिए **तं**-उस प्रतिक्रमण को **वि**-भी **दियंबरा**-दिगम्बर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वज्जरंति**-कहते हैं।

दियंबरा वज्जरंति, पुव्वे हि उज्झणं दोस-हरणाय।
सुह-पच्चक्खाणं तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।107।।

अन्वयार्थ-दोस-हरणाय-दोषों के हरण के लिए **पुव्वे**-पूर्व में **हि**-ही (उनका) **उज्झणं**-त्याग करना **सुह-पच्चक्खाणं**-शुभ प्रत्याख्यान है। **तं**-उस प्रत्याख्यान को **वि**-भी **दियंबरा**-दिगम्बर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वज्जरंति**-कहते हैं।

दियंबरा वज्जरंति, ममत्तुज्झणं देहादु सेयस्स।
सुह-काउस्सग्गो तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।108।।

अन्वयार्थ-सेयस्स-कल्याण के लिए **देहादु**-देह से **ममत्तुज्झणं**-ममत्व का त्याग करना **सुह-काउस्सग्गो**-शुभ कायोत्सर्ग है। **तं**-उस

कायोत्सर्ग को **वि**-भी **दियंबरा**-दिगम्बर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वज्जरंति**-कहते हैं।

दियंबरा वज्जरंति, परिहरेदुं दुहाणि सव्व-सुहाय।
णिय-कत्तव्व-पालणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।109।।

अन्वयार्थ-**दुहाणि**-दु:खों के **परिहरेदुं**-परिहार व **सव्व-सुहाय**-सर्व सुख के लिए **णिय-कत्तव्व-पालणं**-निज कर्त्तव्य के पालन को **वि**-भी **दियंबरा**-दिगम्बर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वज्जरंति**-कहते हैं।

दियंबरा वज्जरंति, सव्वाहार-उज्झणं उववासो।
तं दोस-विणासगं हु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।110।।

अन्वयार्थ-**सव्वाहार-उज्झणं**-सर्व आहार का त्याग करना **उववासो**-उपवास है। **हु**-निश्चय से **दोस-विणासगं**-दोष विनाशक **तं**-उस उपवास को **वि**-भी **दियंबरा**-दिगम्बर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **वज्जरंति**-कहते हैं।

उप्पालंति तवस्सी, ऊण-भक्खणं सव्वदा छुहाए
ऊणोदरमवियारिं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।111।।

अन्वयार्थ-**सव्वदा**-सर्वदा **छुहाए**-क्षुधा से **ऊणभक्खणं**-कम भोजन **अवियारिं**-अविकारी **ऊणोदरं**-ऊनोदर को **वि**-भी **तवस्सी**- तपस्वी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **उप्पालंति**-कहते हैं।

उप्पालंति तवस्सी, चागं दुद्धाइ-रसाणं णिच्चं।
सगप्प-विसुद्धीए हु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।112।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **सगप्प-विसुद्धीए**-स्वात्म विशुद्धि के लिए **णिच्चं**-नित्य **दुद्धाइ-रसाणं**-दूध आदि रसों के **चागं**-त्याग को **वि**-भी **तवस्सी**-तपस्वी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **उप्पालंति**-कहते हैं।

उप्पालंति तवस्सी, सव्वदा धम्मं सुक्कज्झाणं च।
दुक्ख-दाहगं अग्गिं , पसत्थ-लक्खणं वि धम्मस्स।।113।।

अन्वयार्थ-**सव्वदा**-सर्वदा **दुक्ख-दाहगं**-दु:ख को जलाने वाली **अग्गिं**-अग्नि **धम्मं**-धर्म **च**-और **सुक्कज्झाणं**-शुक्ल ध्यान को **वि**-भी **तवस्सी**-तपस्वी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **उप्पालंति**-कहते हैं।

उप्पालंति तवस्सी, अणुवज्जणं साहूण महप्पाण।
स-वीरिअ-जस-वड्ढगं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।114।।

अन्वयार्थ-**स-वीरिअ-जस-वड्ढगं**-स्व वीर्य व यश वर्द्धक **साहूण**-साधुओं **महप्पाण**-महात्माओं की **अणुवज्जणं**-सेवा-सुश्रूषा करने को **वि**-भी **तवस्सी**-तपस्वी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **उप्पालंति**-कहते हैं।

उप्पालंति तवस्सी, अप्पागमज्झयणं हु सज्झायो।
सुह-झाण-कारणं तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।115।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **अप्पागमज्झयं**-आत्मा व आगम का अध्ययन **सज्झायो**-स्वाध्याय है। **सुह-झाण-कारणं**-शुभ ध्यान

का कारण **तं**-उस स्वाध्याय को **वि**-भी **तवस्सी**-तपस्वी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **उप्पालंति**-कहते हैं।

उप्पालंति तवस्सी, उवयारं सया सव्व-जीवेसुं।
सगवर-सुहस्स हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।116।।

अन्वयार्थ-सगवर-सुहस्स-स्व पर के सुख का **हेदुं**-हेतु **सव्व-जीवेसुं**-सर्व जीवों पर **सया**-सदा **उवयारं**-उपकार को **वि**-भी **तवस्सी**-तपस्वी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **उप्पालंति**-कहते हैं।

उप्पालंति तवस्सी, उदारभावजुदं करुणा-भावं।
सुहसंतीण कारणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।117।।

अन्वयार्थ-सुहसंतीण-सुख व शांति के **कारणं**-कारण **उदारभावजुदं**-उदार भाव से युक्त **करुणा-भावं**-करुणा भाव को **वि**-भी **तवस्सी**-तपस्वी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **उप्पालंति**-कहते हैं।

उप्पालंति तवस्सी, सव्वा जीवा पडि दयं हु णिच्चं।
धम्मो दया-विसुद्धो, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।118।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **दया-विसुद्धो**-दया से विशुद्ध **धम्मो**-धर्म है। **णिच्चं**-नित्य **सव्वा**-सभी **जीवा**-जीवों के **पडि**-प्रति **दयं**- दया को **वि**-भी **तवस्सी**-तपस्वी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **उप्पालंति**-कहते हैं।

उप्पालंति तवस्सी, सिद्धखेत्त-वंदणं तित्थजत्तं।
णंद-पुण्ण-वड्ढगं च, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।119।।

अन्वयार्थ-णंद-पुण्ण-वड्ढगं च-आनंद और पुण्य की वर्धक **सिद्धखेत्त-वंदणं**-सिद्धक्षेत्र की वंदना **तित्थजत्तं**-तीर्थयात्रा को **वि**-भी **तवस्सी**-तपस्वी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **उप्पालंति**-कहते हैं।

उप्पालंति तवस्सी, जम्म-पाव-हारगो सया जावो।
महामंतादि-जवं हु, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।120।।

अन्वयार्थ-जावो-जाप **हु**-निश्चय से **जम्म-पाव-हारगो**-जन्म व पाप की हारक है। **सया**-सदा **महामंतादि-जवं**-महामंत्र आदि की जप को **वि**-भी **तवस्सी**-तपस्वी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **उप्पालंति**-कहते हैं।

उप्पालंति तवस्सी, णिच्छयो रज्जमग्गो ववहारो।
पयदंडी सय उहयं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।121।।

अन्वयार्थ-णिच्छयो-निश्चय **सय**-सदा **रज्जमग्गो**-राजमार्ग है व **ववहारो**-व्यवहार **पयदंडी**-पगदंडी **उहयं**-दोनों को **हि**-ही **तवस्सी**-तपस्वी **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **उप्पालंति**-कहते हैं।

अक्खंति जोगीसरा, धण-धण्णादिं पडि णिरीह-विट्ठिं।
वंछा भव-दुह-हेदू, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।122।।

अन्वयार्थ-वंछा-वांछा **भव-दुह-हेदू**-भव दु:ख की हेतु है। **धण-धण्णादिं**-धन-धान्यादि के **पडि**-प्रति **णिरीह-विट्ठिं**-निरीह-वृत्ति

को **वि**-भी **जोगीसरा**-योगीश्वर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **अक्खंति**-कहते हैं।

अक्खंति जोगीसरा, णायमग्गेण धणज्जणं णिच्चं।
महापावमण्णायो, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।123।।

अन्वयार्थ-**अण्णायो**-अन्याय **महापावं**-महापाप है। **णिच्चं**-नित्य **णायमग्गेण**-न्याय मार्ग से **धणज्जणं**-धनार्जन को **वि**-भी **जोगीसरा**-योगीश्वर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **अक्खंति**-कहते हैं।

अक्खंति जोगीसरा, आयरं सक्कारं च अदिहीणं।
होज्ज देवव्व अदिही, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।124।।

अन्वयार्थ-**देवव्व**-**अदिही**-अतिथि देव के समान **होज्ज**-होते हैं। **अदिहीणं**-अतिथियों के **आयरं**-आदर **च**-और **सक्कारं**-सत्कार को **वि**-भी **जोगीसरा**-योगीश्वर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **अक्खंति**-कहते हैं।

अक्खंति जोगीसरा, णिट्ठं समप्पणं णिम्मल-भत्तिं।
मुत्तीए कारणं च, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।125।।

अन्वयार्थ-**मुत्तीए**-मुक्ति की **कारणं**-कारण **णिट्ठं**-निष्ठा **समप्पणं**-समर्पण **च**-और **णिम्मल-भत्तिं**-निर्मल भक्ति को **वि**-भी **जोगीसरा**-योगीश्वर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **अक्खंति**-कहते हैं।

अक्खंति जोगीसरा, बोहं सग-सम्मत्थित्तस्स सया।
सिद्धिकरं अत्थित्तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।126।।

अन्वयार्थ-अत्थित्तं-अस्तित्व **सिद्धिकरं**-सिद्धिकर है। **सया**-सदा **सग-सम्मत्थित्तस्स**-स्व सम्यक् अस्तित्व के **बोहं**-बोध को **वि**-भी **जोगीसरा**-योगीश्वर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **अक्खंति**-कहते हैं।

अक्खंति जोगीसरा, उवसमं हु कोहाइ-कसायाणं।
उवसमो संति-हेदू, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।127।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **उवसमो**-उपशम **संति-हेदू**-शांति का हेतु है। **कोहाइ-कसायाणं**-क्रोध आदि कषायों के **उवसमं**-उपशम को **वि**-भी **जोगीसरा**-योगीश्वर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **अक्खंति**-कहते हैं।

अक्खंति जोगीसरा, पर-गुण-पसंसं णियदोस-णिंदं।
सव्वावगुण-णासाय, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।128।।

अन्वयार्थ-सव्वावगुण-णासाय-सभी अवगुणों के नाश के लिए **पर-गुण-पसंसं**-पर गुणों की प्रशंसा व **णियदोस-णिंदं**-निज दोष निंदा को **वि**-भी **जोगीसरा**-योगीश्वर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **अक्खंति**-कहते हैं।

अक्खंति जोगीसरा, पंचविह-मिच्छत्त-चागं णिच्चं।
मिच्छत्तं भव-हेदू, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।129।।

अन्वयार्थ-मिच्छत्तं-मिथ्यात्व **भव-हेदू**-भव का हेतु है। **णिच्चं**-नित्य **पंचविह-मिच्छत्त-चागं**-पाँच प्रकार के मिथ्यात्व के त्याग

को **वि**-भी **जोगीसरा**-योगीश्वर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **अक्खंति**-कहते हैं।

अक्खंति जोगीसरा, पंचविहायारं मुत्तिं लहिदुं।
आयार-गुणागारो, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।130।।

अन्वयार्थ-**आयार-गुणागारो**-आचार गुणों का गृह है। **मुत्तिं**-मुक्ति **लहिदुं**-प्राप्त करने के लिए **पंच-विहायारं**-पाँच प्रकार के आचार को **वि**-भी **जोगीसरा**-योगीश्वर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **अक्खंति**-कहते हैं।

अक्खंति जोगीसरा, सु-मित्ति-भावणं सव्व-पाणीसुं।
मित्ती हु मोक्ख-मित्तं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।131।।

अन्वयार्थ-**मित्ती**-मैत्री **हु**-निश्चय से **मोक्ख-मित्तं**-मोक्ष की मित्र है। **सव्व-पाणीसुं**-सभी प्राणियों में **सु-मित्ति-भावणं**-सु मैत्री भावना को **वि**-भी **जोगीसरा**-योगीश्वर **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **अक्खंति**-कहते हैं।

कइवि बुहजणा चवंति, गुणीसु मोदं दुहीसु कारुण्णं।
सस्सद-सुहस्स णिच्चं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।132।।

अन्वयार्थ-**सस्सद-सुहस्स**-शाश्वत सुख के लिए **णिच्चं**-नित्य **गुणीसु**-गुणियों में **मोदं**-मोद **दुहीसु**-दुःखियों में **कारुण्णं**-कारुण्य को **वि**-भी **कइवि**-कई **बुहजणा**-बुधजन **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **चवंति**-कहते हैं।

कइवि बुहजणा चवंति, विवरीद-विट्ठि-संजुत्त-जणेसुं।
मज्झत्थ-भावं सया, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।133।।

अन्वयार्थ-विवरीद-विट्ठि-संजुत्त-जणेसुं-विपरीत वृत्ति से संयुक्त जनों में **सया**-सदा **मज्झत्थ-भावं**-माध्यस्थ भाव को **वि**-भी **कइवि**-कई **बुहजणा**-बुधजन **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **चवंति**-कहते हैं।

कइवि बुहजणा चवंति, गोवणं परदोस-सगगुणाणं च।
सादिसय-पुण्ण-हेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।134।।

अन्वयार्थ-सादिसय-पुण्ण-हेदुं सातिशय पुण्य के हेतु **परदोस-सगगुणाणं च**-परदोष और स्व गुणों के **गोवणं**-गोपन को **वि**-भी **कइवि**-कई **बुहजणा**-बुधजन **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **चवंति**-कहते हैं।

कइवि बुहजणा चवंति, सहावं सय सस्सदक्खयप्पस्स।
अविणासि-णिरंजणस्स, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।135।।

अन्वयार्थ-सय-सदा **अविणासि-णिरंजणस्स**-अविनाशी, निरंजन **सस्सदक्खयप्पस्स**-शाश्वत, अक्षय आत्मा के **सहावं**-स्वभाव को **वि**-भी **कइवि**-कई **बुहजणा**-बुधजन **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **चवंति**-कहते हैं।

कइवि बुहजणा चवंति, दुविह-धम्मो णिच्छय-ववहारादु।
णिच्छयं अप्पधम्मं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।136।।

अन्वयार्थ-णिच्छय-ववहारादु-निश्चय व व्यवहार से **दुविह-धम्मो**-धर्म दो प्रकार का है। **णिच्छयं**-निश्चय **अप्पधम्मं**-आत्म धर्म को

वि-भी **कइवि**-कई **बुहजणा**-बुधजन **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **चवंति**-कहते हैं।

कइवि बुहजणा चवंति, सव्वप्पा पडि समभावं णिच्चं।
समदा विसुद्धि-हेदू, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।137।।

अन्वयार्थ-समदा-समता **णिच्चं**-नित्य **विसुद्धि-हेदू**-विशुद्धि का हेतु है। **सव्वप्पा** सर्वात्माओं के **पडि** प्रति **समभावं** समभाव को **वि**-भी **कइवि**-कई **बुहजणा** बुधजन **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **चवंति**-कहते हैं।

कइवि बुहजणा चवंति, अज्झप्प-जीवण-पद्धदिं णिच्चं।
अप्पेणप्प-विसुद्धिं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।138।।

अन्वयार्थ-अप्पेण-आत्मा के द्वारा **अप्प-विसुद्धिं**-आत्मा की विशुद्धि को **णिच्चं**-नित्य **अज्झप्प-जीवण-पद्धदिं**-अध्यात्म जीवन पद्धति को **वि**-भी **कइवि**-कई **बुहजणा**-बुधजन **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **चवंति**-कहते हैं।

कइवि बुहजणा चवंति, सगससरूवाणुसंधाण-विट्ठिं हु।
सुह-संतीण कारणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।139।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **सुह-संतीण**-सुख व शांति की **कारणं**-कारण **सगससरूवाणुसंधाण-विट्ठिं**-स्व स्वरूपानुसंधान वृत्ति को **वि**-भी **कइवि**-कई **बुहजणा**-बुधजन **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **चवंति**-कहते हैं।

कइवय-जदी सासंति, रट्ठणुवज्जणं रक्खणं णिच्चं।
सुसक्किदीइ वड्ढणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।140।।

अन्वयार्थ-णिच्चं-नित्य **रट्ठणुवज्जणं**-राष्ट्र सेवा **रक्खणं**-रक्षण व **सुसक्किदीइ**-सुसंस्कृति के **वड्ढणं**-वर्द्धन को **वि**-भी **कइवय-जदी**-कई यति **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सासंति**-कहते हैं।

कइवय-जदि सासंति, पसारणं सय सुविज्जा-कलाणं।
सुह-संति-समिद्धीणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।141।।

अन्वयार्थ-सुह-संति-समिद्धीणं-सुख, शान्ति, समृद्धि के लिए **सय**-सदा **सुविज्जा-कलाणं**-सुविद्या व कलाओं के **पसारणं**- प्रसार करने को **वि**-भी **कइवय-जदी**-कई यति **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सासंति**-कहते हैं।

कइवय-जदी सासंति, कत्तव्व-पालणं पदणुसारेण।
माणवदाइ रक्खणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।142।।

अन्वयार्थ-पदणुसारेण-पद के अनुसार **कत्तव्व-पालणं**-कर्त्तव्य पालन व **माणवदाइ**-मानवता के **रक्खणं**-रक्षण को **वि**-भी **कइवय-जदी**-कई यति **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सासंति**-कहते हैं।

कइवय-जदी सासंति, साउज्जमुवयारमसहायाणं।
सवर-हिदस्स कारणं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।143।।

अन्वयार्थ-सवर-हिदस्स-स्वपर हित के **कारणं**-कारण **असहायाणं**-असहायकों के **साउज्जं**-सहयोग व **उवयारं**-उपकार को **वि**-भी

कइवय-जदी-कई यति **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सासंति**-कहते हैं।

कइवय-जदी सासंति, तच्चाणं सम्म-चिंतणं णिच्चं।
सव्व-दुहं णस्सेदुं, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।144।।

अन्वयार्थ-सव्वं-दुहं-सभी दुःखों के **णस्सेदुं**-नाश के लिए **णिच्चं**-नित्य **तच्चाणं**-तत्त्वों के **सम्म-चिंतणं**-सम्यक् चिंतन को **वि**-भी **कइवय-जदी**-कई यति **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सासंति**-कहते हैं।

कइवय-जदी सासंति, अण्णा-पालणं सुपुज्ज-जणाणं।
विसयादो विरत्तिं च, पसत्थलक्खणं वि धम्मस्स।।145।।

अन्वयार्थ-सुपुज्ज-जणाणं-सुपूज्य जनों की **अण्णा-पालणं**-आज्ञा के पालन **च**-और **विसयादो**-विषयों से **विरत्तिं**-विरक्ति को **वि**-भी **कइवय-जदी**-कई यति **धम्मस्स**-धर्म का **पसत्थलक्खणं**-प्रशस्त लक्षण **सासंति**-कहते हैं।

णहं व पुण्ण-धम्मो ण खंड-जोग्गो कयावि कम्मि खेत्ते।
खंडरूवं गहिज्जदि, ण समत्थो पुण्ण-फल-देदुं।।146।।

अन्वयार्थ-पुण्ण-धम्मो-पूर्ण धर्म **णहं व**-नभ के समान है वह **कयावि**-कदापि **कम्मि**-किसी भी **खेत्ते**-क्षेत्र में **खंड-जोग्गो**-खंड योग्य **ण**-नहीं है। यदि उसे **खंडरूवं**-खंड रूप **गहिज्जदि**-ग्रहण किया जाता है तो वह **पुण्ण-फल-देदुं**-पूर्ण फल देने में **समत्थो** समर्थ **ण**-नहीं होता।

महण्णोव्व हु चेयणा-धम्मो संजुदो बहु-लक्खणेहिं।
जलं विणा ण णदी जह, सुभावं विणा ण धम्मो तह।।147।।

अन्वयार्थ-बहु-लक्खणेहिं-बहुत लक्षणों से **संजुदो**-संयुक्त **चेयणा-धम्मो**-चेतना का धर्म **हु**-निश्चय से **महण्णोव्व**-महार्णव के समान है। **जह**-जैसे **जलं**-जल के **विणा**-बिना **णदी**-नदी **ण**-नहीं होती **तह**-वैसे **सुभावं**-सुभाव के **विणा**-बिना **धम्मो**-धर्म **ण**-नहीं होता।

पयदंडीव धम्मस्स एय-लक्खणं हि पुण्ण-धम्मेणं।
संभवो लक्ख-पत्ती, कहणीयो पुण्ण-धम्मो णो।।148।।

अन्वयार्थ-धम्मस्स-धर्म का **एय-लक्खणं**-एक लक्षण **पयदंडीव**-पगदंडी के समान है। **पुण्ण-धम्मेणं**-पूर्ण धर्म से **हि**-ही **लक्ख-पत्ती**-लक्ष्य की प्राप्ति **संभवो**-संभव है। **पुण्ण-धम्मो**-पूर्ण धर्म **कहणीयो**-कहने योग्य **णो**-नहीं है।

भिण्ण-भिण्ण-णियदरूव-सहावो होदि पत्तेय-दव्वस्स।
तं सहावं दव्वस्स, तस्स संपुण्ण-धम्मो जाण।।149।।

अन्वयार्थ-पत्तेय-दव्वस्स-प्रत्येक द्रव्य का **भिण्ण-भिण्ण-णियदरूव-सहावो**-भिन्न-भिन्न, नियत रूप स्वभाव **होदि**-होता है। **दव्वस्स**-द्रव्य के **तं**-उस **सहावं**-स्वभाव को **तस्स**-उसका **संपुण्ण-धम्मो**-संपूर्ण धर्म **जाण**-जानो।

जीव पोग्गल-सहावो, कयाइ परिणमदि विहाव-रूवं वि।
सुद्ध-सहावो य सुद्ध-धम्मो णेव विहाव-रूवो।।150।।

अन्वयार्थ-जीव-पोग्गल-सहावो-जीव, पुद्गल का स्वभाव **कयाइ**-कदाचित् **विहाव-रूवं**-विभाव रूप **वि**-भी **परिणमदि**-

परिणमित होता है। **सुद्ध-सहावो**-शुद्ध स्वभाव **य**-और **सुद्ध-धम्मो**-शुद्ध धर्म **विहाव-रूवो**-विभाव रूप **णेव**-नहीं होते।

होदि पत्तेय-वत्थुं, संजुदं णिच्चं अणेग-अंतेहि।
तं जाणेदुमुवायो, सियावाय-णयविवक्खा वा।।151।।

अन्वयार्थ-पत्तेय-वत्थुं-प्रत्येक वस्तु **णिच्चं**-नित्य **अणेग-अंतेहि**-अनेक अंत (अर्थात् धर्म) से **संजुदं**-संयुक्त **होदि**-होती है। **सियावाय-णयविवक्खा वा**-स्याद्वाद अथवा नयविवक्षा **तं**-उसे **जाणेदुं**-जानने के **उवायो**-उपाय हैं।

अक्कस्स एग-किरणं, णेव हवेदि जह संपुण्ण-अक्को।
धम्म-एगपक्खो तह, कहं पुण्णं होदुं सक्को।।152।।

अन्वयार्थ-जह-जैसे **अक्कस्स**-सूर्य की **एग-किरणं**-एक किरण **संपुण्ण-अक्को**-संपूर्ण सूर्य **णेव**-नहीं **हवेदि**-होती है **तह**-वैसे ही **धम्म-एगपक्खो**-धर्म का एक पक्ष **पुण्णं**-पूर्ण धर्म **होदुं**-होने में **कहं**-किस प्रकार **सक्को**-समर्थ है?

वत्थु-धम्मं गहेदुं, सक्का अणेय-दिट्ठी संसारे।
एयदिट्ठीए पुण्ण-धम्म-गहणं संभवो णेव।।153।।

अन्वयार्थ-संसारे-संसार में **अणेय-दिट्ठी**-अनेक दृष्टियाँ **वत्थु-धम्मं**-वस्तु धर्म को **गहेदुं**-ग्रहण करने में **सक्का**-समर्थ हैं। **एयदिट्ठीए**-एक दृष्टि से **पुण्ण-धम्म-गहणं**-पूर्ण धर्म ग्रहण करना **संभवो**-संभव **णेव**-नहीं है।

होदि णो पुण्ण-पुरिसो, एयंगं पुरिसस्स कयावि जहा।
अंगं अंसं व जाण जदि सम्म-धम्मंसं गहेदि।।154।।

अन्वयार्थ-जहा-जिस प्रकार **पुरिसस्स**-पुरुष का **एयंगं**-एक अंग **कयावि**-कदापि **पुण्ण-पुरिसो**-पूर्ण पुरुष **णो**-नहीं **होदि**-होता। (उसी प्रकार अंश मात्र पूर्ण धर्म नहीं होता।) **अंगं**-अंग को **अंसं व**-अंश के समान **जाण**-जानो। **जदि**-यदि **सम्मं**-वह अंग सम्यक् है तो **धम्मंसं**-सम्यक् धर्म के अंश को **गहेदि**-ग्रहण करता है।

मिच्छा अणेग-दिट्ठी, मिलित्तु वि होदि ण सम्मणेगंतो।
जह सादावेक्खाए, णिंबो कडुगो ण फासादो।।155।।

अन्वयार्थ-मिच्छा-मिथ्या **अणेग-दिट्ठी**-अनेक दृष्टि **मिलित्तु**-मिलकर **वि**-भी **सम्मणेगंतो**-सम्यक् अनेकांत **ण**-नहीं **होदि**-होती। **जह**-जिस प्रकार **सादावेक्खाए**-स्वाद की अपेक्षा से **णिंबो**-नीम **कडुगो**-कड़वा है **ण फासादो**-स्पर्श की अपेक्षा नहीं।

एय-सम्म-दिट्ठी णो, होदि विरोही सम्मण्ण-दिट्ठीण।
एग-पदीव-पयासो, ण अण्ण-दीव-पयासस्स जह।।156।।

अन्वयार्थ-एय-सम्म-दिट्ठी-एक समीचीन दृष्टि **सम्मण्ण-दिट्ठी**-अन्य समीचीन दृष्टियों की **विरोही**-विरोधी **णो**-नहीं **होदि**-होती। **जह**-जैसे **एग-पदीव-पयासो**-एक प्रदीप का प्रकाश **अण्ण-दीव-पयासस्स**-अन्य दीप के प्रकाश का विरोधी **ण**-नहीं होता।

दिट्ठी हि सम्मरूवा, होज्जा अणंत-सम्माइट्ठीणं।
दिट्ठी मिच्छारूवा, अणंत-मिच्छाइट्ठीणं च।।157।।

अन्वयार्थ-अणंत-सम्माइट्ठीणं-अनंत सम्यग्दृष्टियों की **दिट्ठी**-दृष्टि **सम्म-रूवा**-सम्यक् रूप **हि**-ही **होज्जा**-होती है **च**-और **अणंत-मिच्छाइट्ठीणं**-अनंत मिथ्यादृष्टियों की **दिट्ठी**-दृष्टि **मिच्छारूवा**-मिथ्यारूप ही होती है।

मोक्खं गदा उसहाइ-वीर-पेरंत-मणुबद्ध-केवली।
पंचमयालारंभे, अण्णा सव्व-सुद-केवलिणो।।158।।

गदे किंचिवि कालो य, होही सूरी पाढग-साहू ते।
सिरि-कुंदकुंदाइरिय-परंपराइ विज्जंत-मुणी।।159।।

तस्सेव परंपराइ, चरियचक्किं संतिसायर-सूरिं।
सूरि-पद-विहूसिदा य, तस्स सव्व-सिस्सा पायसायरं।।160।।

तस्स सिस्सं जयकित्ति-सूरिं सया देसभूसणं तस्स।
भारद-गोरवं धम्म-पहावगं णमामि भत्तीइ।।161।।

अन्वयार्थ-मोक्खं-मोक्ष **गदा**-गए **उसहाइ-वीर-पेरंतं**-श्री ऋषभनाथ से महावीर स्वामी तक सभी को **अणुबद्ध-केवली**- अनुबद्ध केवली **पंचमयालारंभे**-पंचम काल के आरंभ में **अण्णा**- अन्य **सव्व-सुद-केवलिणो**-सभी श्रुत केवलियों को **किंचिवि**- किंचित् **कालो**-काल **गदे**-बीतने पर **सूरी**-आचार्य **पाढग-साहू य**-पाठक और साधु **होही**-हुए **ते**-उन्हें **सिरि-कुंदकुंदारिय-परंपराइ**-श्री कुंदकुंदाचार्य की परंपरा में **विज्जंत-मुणी**-विद्यमान मुनियों **तस्सेव**-उन्हीं की **परंपराइ**-परंपरा में **चरियचक्किं**-चारित्र चक्रवर्ती **संतिसायर-सूरिं**-आचार्य श्री शांतिसागर जी **य**-और **सूरि-पद-विहूसिदा**-आचार्य पद से विभूषित **तस्स**-उनके **सव्व-सिस्सा**- सभी शिष्यों तथा **पायसायरं**-आचार्य श्री पायसागर **तस्स**-उनके **सिस्सं**-शिष्य

जयकित्ति-सूरिं-आचार्य श्री जयकीर्ति **तस्स**-उनके शिष्य **धम्म-पहावगं**-धर्म प्रभावक **भारद-गोरवं**-भारत गौरव **देसभूसणं**-आचार्य श्री देशभूषण जी को **भत्तीइ**-भक्ति से **सया**-सदा **णमामि**- नमस्कार करता हूँ।

वीसम-सदीइ सूरिं, रट्ठ-संतं णाणि-विज्जाणंदं।
सिद्धंत-चक्किं सेद-पिच्छि-धारगं पणमामि हं।।162।।

अन्वयार्थ-वीसम-सदीइ-बीसवीं सदी के **रट्ठ-संतं**-राष्ट्र संत **सिद्धंत-चक्किं**-सिद्धांत चक्रवर्ती **सेद-पिच्छि-धारगं**-श्वेत पिच्छी धारक **णाणि-विज्जाणंदं**-ज्ञानी **सूरिं**-आचार्य श्री विद्यानंद जी को **हं**-मैं **पणमामि**-नमस्कार करता हूँ।

अण्णाणेगाइरिया, उवयारगा मे उहय-रूवेणं।
ते सव्वे णमंसामि, तिजोगेहि सय तिभत्तीए।।163।।

अन्वयार्थ-अण्ण-अणेग-आइरिया-अन्य अनेक आचार्य **उहय-रूवेणं**-उभय रूप से **मे**-मेरे **उवयारगा**-उपकारक हैं। **ते**-उन **सव्वे**-सभी को **सय**-सदा **तिभत्तीए**-तीन भक्ति व **तिजोगेहि**-तीनों योगो से **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

चरित्त-गइ-समिदि-सेणि-वीरणिव्वाणद्धे भद्दपदे।
पुण्णिमाइ भिउवारे, सदभिसाए सोम्मजोगम्मि।।164।।

भारदे इंदपत्थे, पासणाह-जिणभवणे गंथिणमो।
पुण्णो गुरू-किवाए, समप्पामि गुरुकरकमलेसु।।165।।

अन्वयार्थ-इणमो-यह **गंथो**-ग्रंथ **चरित्त-गइ-समिदि-सेणि-वीरणिव्वाणद्धे**-चारित्र 5, गति 4, समिति 5, श्रेणी 2 किन्तु अंकानां

वामतो गतिः से 2545 **वीरणिव्वाणद्धे**-वीर निर्वाणाब्धि **भद्दपदे**-भाद्रपद **पुण्णिमाइ**-पूर्णिमा **भिउवारे**-शुक्रवार **सदभिसाए**-शतभिषा नक्षत्र **सोम्मजोगम्मि**-सौम्य योग में **भारदे**-भारत **इंदपत्थे**-इंद्रप्रस्थ दिल्ली **पासणाह-जिणभवणे**-श्री पार्श्वनाथ जिनभवन में **गुरू-किवाए**-गुरु कृपा से **पुण्णो**-पूर्ण हुआ। इसे **गुरुकरकमलेसु**-गुरु के कर कमलों में **समप्पामि**-समर्पित करता हूँ।